

## किसी भी बिमारी के लिए दोषरहित चिकित्सा विज्ञान है 'पंचगव्य'

य. निरंजन, पंचगव्य विशेषज्ञ (महर्षि वाग्भट्ट गौशाला एवं पंचगव्य अनुसंधान केंद्र, कांचीपुरम)

कांचीपुरम। जिस प्रकार से बिमारियों की संख्या और उनका विस्तार हो रहा है उससे तो यही लगता है कि दुनिया में कुछ ही लोग बचे हैं जो किसी भी बिमारी से ग्रसित न हों। बढ़ती हुई बिमारियों और उसके विस्तार पर गहराई से किए गए अध्ययन के अनुसार पता चलता है कि इसका मुख्य कारण अनाज, फल और सब्जियों का गिरता स्तर है। अधिक उत्पादन के लालच में कृषि क्षेत्र में बहुत जहरीले रसायनों का प्रयोग इस प्रकार से किया जा रहा है कि रसायन अपने गुण और धर्म के साथ इन खाद्य वस्तुओं में जमा हो जाता है और यही पेट में जाने के बाद अनगिनत तरह का विकार शरीर में फैलाता है। यही कारण है कि आज सरकार और सामाजिक संस्थाएं एक साथ रसायन मुक्त खेती को प्रचारित कर रही हैं।

रसायन मुक्त खेती का ही वैकल्पिक नाम है जैविक कृषि। इसके नाम से ही अर्थ का अनुमान लगता है कि वैसी खेती जो जीवों के आधार पर हो, जीवाणुओं की सहायता से हो अर्थात् कृषि जो अहिंसक हो। जब कृषि में हिंसा नहीं होगी तभी उस विधि द्वारा उत्पादित अनाज, फल एवं सब्जियों में सात्विक गुण होगा और ऐसी वस्तुओं को खाने से ही हमारा मन सात्विक एवं मन निरोगी बना रहेगा। अमेरिका में किए एक अध्ययन से यह स्पष्ट हो गया है कि समाज में बढ़ती हुई हिंसा को रोकने के लिए अहिंसक अनाज (जैविक खाद्य सामग्री) की जरूरत है।

यहां पर यह विषय चिंतनीय है कि जैविक कृषि के लिए सबसे जरूरी विषय है, मिट्टी में पोषक तत्वों को बढ़ाना और इसके लिए एक ही विकल्प है गाय का गोबर और गौमूत्र अतः कुल मिलाकर निचोड़ यही निकलता है कि इस धरती पर जितनी अधिक गायें होंगी उतना अधिक गोबर और गौमूत्र मिलेगा और जितना अधिक गोबर और गौमूत्र होगा उतना अधिक जैविक फल, अनाज और सब्जियों का उत्पादन हो सकेगा। अर्थात् गाय का सीधा संबंध हमारे निरोगी जीवन से है।

जैविक अनाज, फल, और सब्जियों के सेवन के बाद भी कुछ गलतियों के कारण यदि हम बिमार पड़ते हैं तो गाय हमें गव्य के रूप में तीन प्रकार के अमृत देती है। पहला दूध, दूसरा गोबर और तीसरा गौमूत्र। इन तीनों गव्यों का सेवन हम सीधे-सीधे अपने जीवन में भी कर सकते हैं। इनमें से दूध गव्य को हमारे महर्षियों ने दो अन्य गव्य के रूप में परिवर्तित किया है। पहला छाछ और दूसरा घृत (घी)। इनको मिलाकर कुल पाँच गव्य हुए। दूध, गौमूत्र, गोबर, छाछ और घृत। इन पाँचों गव्यों के समूह को 'पंचगव्य' कहा गया। इस पंचगव्य में दुनिया की किसी भी बिमारी को जड़-मूल से नष्ट करने की क्षमता है। अकेले गौमूत्र में २४ प्रकार के मिनरल्स पाए जाते हैं और यह सभी मिनरल्स हमारे शरीर में उपस्थित होते हैं। अतः इसके सेवन से हमारे शरीर के तत्वों में कभी भी कमी नहीं आती, निरोगी रहने का यही मूत्र-मंत्र है।

नोट – इस लेख की अगली कड़ी अगले सप्ताह।